वातावरण बनाया जा रहा है। यह काम वो लोग कर रहे हैं, जो भारत को समृद्धशाली होता नहीं देखना चाहते। इस षडयंत्र के पीछे ऐसी ताकतें काम कर रही हैं, जो सकारात्मक सोच लेकर चल रहे भारत को राजनैतिक भूमिका में लाकर दुर्बल करना चाहते हैं। हम जब भारतीय संस्कृति और भारतीय राष्ट्रीयता की बात कहते हैं, तो इसका वैकल्पिक शज़्द हिन्दू संस्कृति और हिन्दू राष्ट्रीयता है। ये धर्म का विषय नहीं है। इस्लामिक राष्ट्र, इस्लामिक विषय यह मजहब हो सकता है, लेकिन हिन्दू राष्ट्र और हिन्दू संस्कृति धर्म नहीं हो सकता। ज़्योंकि हिन्दू कोई धर्म नहीं है। लेकिन इन्हें कौन समझाए। हिन्दू को धर्म से ज़्यों जोड़ा जाता है, ज़्या हिन्दू की कोई पद्धति है। हिन्दू का कौन सा भगवान है। हिन्दू का कौन सा एक ग्रंथ है। सज़्प्रदाय, धर्म वह होते हैं जिनका ग्रंथ होता है, जिनकी पद्धति होती है, जिनके पूजा के स्थल एक होते हैं। हिन्दू समाज तो विविधता से भरा हुआ है। इसलिए हम कहते हैं कि इस देश में रहने वाला चाहे इस्लाम को मानने वाला हो या इसाई हो वह इसी देश का है। उन्हें ये मानना चाहिए कि वे इसी देश की संतान हैं। हमारे पूर्वज अलग-अलग नही हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी देखें कि हम कौन हैं। जिस तरह के गलत प्रचार चल रहे हैं, उसमें भारत माता की जय कहना भी कठिन है। सारे देश को जोड़ने का एक ही मंत्र है भारत माता की पूजा। सारा समाज ये मानें कि भारत माता ही हमारी देवता है। इसलिए इसे एक रखने की आवश्यकता है। यह दुर्भाग्य है कि हम अपने-पराए को नहीं पहचान सके, इसलिए आक्रांताओं को भी अपना मान लिए। जो भारत में आक्रमण करने आया है, उसने यहां की स्थापित बातों को मिटाना चाहा। मुगल सम्राट आक्रमण के लिए आए उन्होंने अपना विजय प्रतीक कुतुब मीनार बनाया। दिल्ली में कनॉट प्लेस है। कितने लोग जानते हैं कनाट कौन है? बच्चे यदि पूछ लिए तो हम ज़्या बताएंगे। ताजमहल भारत का गौरव है। नार्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू ज़्या है, अंग्रेजों का रखा नाम है। मजेदार बात ये है कि ये सब हमारी समझ में नहीं आता। हमें सोचना होगा कि देश की अस्मिता, राष्ट्रीयता में हम एक है यह भाव कैसे जागृत होगा। अयोध्या का संघर्ष केवल मस्जिद हटाना नहीं था। राममंदिर का निर्माण भी ध्येय नहीं है। देश में कई जगह राम के मंदिर हैं। मंदिर की बात हम इसलिए करते हैं कि ये हमारी अस्मिता से जुड़ा मसला है। वह हमारा अपना है। पराया नहीं है किसी आक्रमणकारी ने नहीं बनाया। राम मन्दिर इस देश की करोड़ों जनता के हृदय की राष्ट्रीयता का प्रतीक है। इसका विवेक, इसका विचार स्थापित करना पड़ेगा। इसलिए इसका विरोध करने वाले राजनैतिक दृष्टि से सोचते हैं। उनके मन और दिमाग में राजनैतिक राष्ट्रवाद है। वह वोट के आधार पर विचार करते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को मानते वाले किसी को अच्छा लगे या गलत जो उचित है उसी को रखने का प्रयास करते हैं। हमें इन बातों को समझने की आवश्यकता है। हमने अंग्रेजी को अपनी भाषा मान लिया। ज़्योंकि हमें अपना पराया समझ में नहीं आता। हम किसी भी भाषा के विरोधी नहीं है। हम विविध प्रकार की भाषाएं सीखें। परन्तु हम अगर एक विचार करें कि अगर भारत को समझना है तो ज़्या भारत को विदेशी भाषाओं के माध्यम से समझ सकेंगे। अपने प्राचीन गौरव का एक विश्वास मन में जगाते हुए उस